पाठ 21

मैत्रीबाग

43YHCR

पाठ परिचय – आगू जमाना म चिट्ठी–पतरी लिखके सोर–संदेस पठोवँय। फेर अब तो मोबाइल आगे हावय। तभो ले चिट्ठी–पतरी लिखे के अलगे महत्तम होथे। काबर के चिट्ठी के आखर म जादा मया झलकथे। ए पाठ म कका ह अपन भतीजा ल चिट्ठी लिखके मैत्रीबाग के वर्णन करे हे। ए पाठ के उद्देश्य लइका मन ल चिट्ठी–पतरी लिखे के तरीका अउ नमूना के जानकारी देना हे।

रिसाली, भिलाई
दिनांक 15/10/12

मयारुक मनीष,

खुशी रह!

मैं हा इहाँ बने मँजा म हावँव। घर म उहाँ सब झन बने–बने होहू, अइसे आशा करत हँव। मँय ह जउन बुता बर भिलाई आए हँव, ओ बुता होए म अभी अउ समे लागही। तैं ह बने पढ़इ–लिखइ करत रहिबे।

शिक्षण संकेत– लइका मन ल डाकघर के बारे म बतावँय। पोस्टकार्ड, लिफाफा, अन्तर्देशीय पत्र के नमूना देखावँय। उनला चिट्ठी लिखे के महत्तम बतावँय। तीर–तखार के कोनो देखे जघा के बरनन चिट्ठी के रूप म करावँय।

मैं हा काली भिलाई के 'मैत्रीबाग' घूमे बर गे रेहेंव। मैत्रीबाग ह सुग्घर देखे के लइक हे। भिलाई अवइया मनखे मन एला देखे बर खचित आथें।

मैत्रीबाग ह भिलाई शहर के भीतरी म बड़े जन बगइचा आय। एहा देखे म जंगल–झाड़ी असन दिखथे। ए बगइचा ल लोहा के बड़े–बड़े जाली म घेर–घेर के कतकोन खँड़ बना दे गेहे। इही खँड़ मन म जानवर मन ल खुल्ला राखे गे हे। जम्मो जानवर मन उहाँ अइसे घूमत रहिथें जानो–मानो सिरतोन के जंगल आय।

मैत्रीबाग के एक हिसा म चिड़ियाघर बनाए गे हे, जिहाँ बघवा, भलुवा, चितवा, हुँड़रा, कोलिहा, कतकोन किसम के हइरना अउ बेंदरा मन अलगे–अलगे रहिथें। पँड़रा बघवा, जेब्रा घलो हे। बड़का–बड़का मंगर मन झील के तीर–तीर म सुते रहिथें। सुग्घर अउ रंग–बिरंग के चिरइ मन ह घलो मन ल मोहि डारथें। मैत्रीबाग ह दुनिया भर के कतकोन जात के चमगेदरी मन के माड़ा बनगे हावय।

अड़बड़ अकन लइका–मन अपन दाई–ददा संग इहाँ आय रहिन। ओ मन खेलत–कूदत अड़बड़ मजा करत रहिन। जेला देखके मोला तुँहर मन के सुरता आगे। मैं ह सोंचत रेहेंव – मोरो लोग–लइका मन कहूँ मोर संग म रहितिन त कतका मँजा आतिस। तोर परीक्षा ल होवन दे, तहाँ

एक पइत जम्मो झन भिलाई घूमे बर आबो अउ मैत्रीबाग ल बने देखबो।

मैत्रीबाग म एक ठिन बड़े जन झील घलो बने हावय। ओमा फरियर पानी भरे हावय। कमल के फूल घलो रिगबिग ले फूले हावय। झील म डोंगा घलो हे। जेमा सब बइठथें अउ मँजा लेवत घूमथें। तुँहर मन संग आबो त हमू मन डोंगा म बइठ के मँजा लेबो।

मैत्रीबाग म एक ठिन सुग्घर फोहारा लगे हे। फोहारा के संग म गाना के धुन बाजत रहिथे। जे ह बड़ नीक लागथे। एला देखे बर बड़ दुरिहा–दुरिहा ले लोगन मन आथे।

एकर छोड़ लइका मन के खेले के अउ झुले के कतको जिनिस हे। लइका मन बर नानुक छुक–छुक रेलगाड़ी घलो चलथे। ये जम्मो जिनिस लइका मन ल बड़ भाथे। जे लइका इहाँ आथे ओहा इहाँ ले जाना नइ चाहय।

भिलाई म बड़ जब्बर इस्पात के कारखाना हे। ये कारखाना ह रूस देश अउ भारत के मितानी के चिन्हारी आय। इही मितानी के सुरता अउ चिन्हारी खातिर ये ''मैत्रीबाग'' ल बनाय गेहे।

ए चिट्ठी म अभी अतकेच। घर म सबो झन ल मोर अड़बड़ मया अउ दुलार।

तोर कका
रमेसर

कठिन शब्द मन के हिन्दी मायने

मैत्री	–	मित्रता
हइरना	–	हिरण
मँजा	–	आनंद
मितानी	–	मित्रता
बुता	–	काम
दुरिहा ले	–	दूर–दूर से
जेला	–	जिसे
अड़बड़	–	बहुत
सुरता	–	याद
जिनिस	–	चीज

प्रश्न अउ अभ्यास

गतिविधि–

कक्षा ल दू दल म बाँट के एक दूसर ले मुँहअखरा प्रश्न पूछँय। प्रश्न अइसन हो सकत हे–

क. ए चिट्ठी ल कोन ह काकर बर लिखिस ?

ख. ए चिट्ठी कहाँ ले लिखे गिस ?

बोध प्रश्न–

प्रश्न 1 खाल्हे म लिखाय प्रश्न के उत्तर लिखव–

1. मैत्रीबाग कोन शहर म हे ?
2. झील म कइसन पानी भरे रहिथे ?
3. मैत्रीबाग ह देखे म कइसे दिखथे ?
4. भिलाई म का जिनिस के जब्बर कारखाना हे ?
5. फोहारा के संग का बाजत रहिथे ?
6. डोंगा कहाँ चलथे ?

प्रश्न 2. खाली जघा ल भरव

1. मैत्रीबाग ..... शहर म हे । (रायपुर/भिलाई)
2. झील के तीर–तीर म..... मन सुते रहिथे। (मंगर/बघवा)
3. भिलाई म ..... के जब्बर कारखाना हे। (इस्पात/बिजली)
4. ..... म फरियर पानी भरे रहिथे। (तरिया/झील)
5. मैत्रीबाग म जनावर मन ..... रहिथें। (बँधाय/खुल्ला)

भाषा तत्व अउ व्याकरण

प्रश्न 1 हिन्दी म (अर्थ) मायने लिखव –

जइसे– फरियर = स्वच्छ

कोलिहा = ...।

चिरइघर = ...।

डोंगा = ...।

चमगेदरी = ...।

फोहारा = ...।

जिनिस = ...।

जब्बर = ...।

मितानी = ...।

बुता = ...।

प्रश्न 2. पढ़व अउ गुनव –

1. मैं हा घूमे ल **जाथँव**।
2. ओहा घूमे ल **जाथे**।
3. हमन घूमे ल **जाथन**।
4. ओमन घूमे ल **जाथे**।
5. राजू घूमे ल **जाथे**।
6. मीना घूमे ल **जाथे**।

प्रश्न 3. खाल्हे म लिखाय शब्द मन के वाक्य बनावव –

जइसे – फोहारा

वाक्य – फोहारा म नहाय म बड़ मँजा आथे।

जिनिस, दुरिहा, बगइचा, बड़का, लोग–लइका ।

प्रश्न 4. लिंग बदलव –

जइसे– ममा – मामी

1.	ददा	..... ।	2.	बघवा	..... ।
3.	बड़का	..... ।	4.	कका	..... ।
5.	मितान	..... ।	6.	बेंदरा	..... ।

प्रश्न 5. ''सभी'' हिन्दी शब्द आय, छत्तीसढ़ी म एकर मायने होथे''जम्मो''। अइसने खाल्हे म लिखाय शब्द मन के मायने छत्तीसगढ़ी म लिखव –

1. मगर ..... ।
2. बहुत बड़ा ..... ।
3. कितना ..... ।
4. फव्वारा ..... ।
5. मित्रता ..... ।
6. बंदर ..... ।
7. चमगादड़ ..... ।
8. प्रिय ..... ।
9. क्यों ..... ।

रचना–

तुँहर गाँव म लगइया मेला–मड़ई के बरनन करत अपन बड़े भइया ल चिट्ठी लिखव।

योग्यता विस्तार–

1. चिरइ–चिरगुन अउ जानवर मन के नाँव लिखके उँखर बोली ल घलो लिखव।

   जइसे– बिलइ – मियाऊँ
2. सुंदर बगइचा के चित्र बनावव।
3. अपन पसंद के फूल के चित्र बनावव।

448DEE